साहसी होना भी है एक निर्णय

दीपांजली काकाती

मैरियॉन ल्यूना ब्रेम जब 30 वर्ष की थी तो उससे कहा गया कि वह मौत के कगार पर है। तीन माह के अंतराल में उसके ग्रीवा तथा स्तन कैंसर से ग्रस्त होने का पता लगा और डॉक्टरों ने साफ कह दिया कि वह दो से लेकर पांच वर्ष तक ही जी सकेगी। यह 20 वर्ष से भी पुरानी बात है। सदा घर पर ही रहने वाली मां ब्रेम की सर्जरी हुई और कीमोथेरेपी से इलाज किया गया। तभी, उनके पति का मेडिकल बीमा भी समाप्त हो गया। वैवाहिक जीवन का तनाव इतना बढ़ा कि उन दोनों के बीच तलाक हो गया।

दो छोटे-छोटे बेटों की मां ब्रेम के पास आजीविका का कोई साधन नहीं रहा। तब उसने उस स्थिति के बारे में गंभीरता से सोचा। वह कहती हैं, ''मैंने हिम्मत के साथ इस स्थिति का सामना करने का निश्चय किया। मेरा मूलमंत्र ही यह है कि अगर कोई हिम्मती बनना चाहता है तो बन सकता है। हिम्मत तोहफे में नहीं मिलती। न विरासत में मिलती है। यह शीशे में अपने-आप को देखकर यह कह कर मिलती है, ''मुझे आज से हिम्मती बनना है।''

एक दिन उसके 7 और 12 वर्ष के दोनों बेटे अपने लिए खाना पका रहे थे। बीमार और कीमोथेरेपी के असर से कमजोर पड़ी ब्रेम बाथरूम के फर्श पर लेटी हुई थी। उसे लगा कि कहीं कुछ जल रहा है, लेकिन उठ कर देखने की ताकत शरीर में नहीं थी। तभी उसका बड़ा बेटा पैन में जलती, धुआं छोड़ती मैकरॉनी और पनीर लेकर भीतर आया और बोला, ''कोई चिंता नहीं मां, बस तली में ही तो जला है। ऊपर से ठीक है।''

''मैं फर्श पर से उठी और मुझे लगा कि मरने से काम नहीं चलेगा'' वह कहती हैं। ''बल्कि वह मैकरॉनी और पनीर मेरे जीवन के लिए रूपक बन गया। आपके जीवन में अगर कुछ नष्ट हो भी गया, तब भी ऊपरी हिस्से में कुछ तो ठीक रहता ही है। मैं सदा उसी हिस्से पर ध्यान देती हूं।''

असल में ब्रेम तब इंजीनियरी की डिग्री के लिए पढ़ाई कर रही थी लेकिन उसे कॉलेज छोड़कर काम तलाशना पड़ा। उसने बाद में बोस्टन, मेसाच्यूसेट्स स्थित हार्वर्ड बिजनेस स्कूल के एक्जिक्यूटिव एजुकेशन प्रोग्राम के तहत ग्रेजुएशन पूरा किया।

उन दिनों उसे किसी खास काम में कोई महारत हासिल नहीं थी, इसलिए एक मित्र के कहने पर बिक्री के काम में हाथ आजमाने का निश्चय किया। कीमोथेरेपी के कारण उसके बाल उड़ गए थे। लेकिन, ब्रेम ने विग पहनी और काम की तलाश में निकल पड़ी। उसने कभी किसी ऑटो डीलर के यहां पार्ट टाइम टेलीफोन स्विचबोर्ड ऑपरेटर का काम किया था। सोचा, वहीं से शुरू करना ठीक रहेगा। लेकिन, डीलर मना करते गए। सत्रहवें डीलर से मिली तो उसने काम का मौका दिया। अक्टूबर 1984 में, जब वह 32 वर्ष की थी, उसने पहली बार कार बेची। और, दो महीने बाद उसे 'माह की श्रेष्ठ सेल्समैन' घोषित किया गया। बारह माह बाद वह 'वर्ष की श्रेष्ठ सेल्समैन' बन गई।

वर्ष 1985 में कैंसर फिर से बढ़ गया और ब्रेम के स्तन का पुन: आपरेशन किया गया। 1995 में जाकर उनसे कहा गया कि अब उनका कैंसर घट रहा है। इस रोग से लड़ते-लड़ते, उन्होंने चुपचाप एक निवेशक की मदद ली और 1989 में कॉर्पस क्रिस्टी, टेक्सस में लव क्रिस्लर के नाम से स्वयं अपनी कार डीलरशिप शुरू कर दी।

''मैं रात में लेटे-लेटे अपनी भावी डीलरशिप का नाम सोचती रहती थी, ठीक वैसे ही जैसे गर्भवती महिला अपने होने वाले बच्चे का नाम सोचती रहती है,'' वह कहती हैं। ''मैं जानती थी, किसी प्रतीक या चिह्न पर आधारित नाम मैंने नहीं रखना है। इसलिए मैंने सकारात्मक छवि सामने रखने वाली संज्ञाओं पर विचार किया। हैरिटेज, इंटिग्रिटी वगैरह। तभी मुझे इसका विचार आया! लव यानी प्यार से अधिक सकारात्मक शब्द और क्या हो सकता है? यह संज्ञा भी है और क्रिया भी। मुझे पता था, अपने ग्राहकों और कर्मचारियों के लिए मैं यही तो सोचूंगी। अपने काम के प्रति मेरे जुनून को यही अर्थ देगा।'' दो वर्ष के भीतर उसने अपने भागीदार का हिस्सा भी खरीद लिया और अपनी ही कंपनी की सीईओ बन गई।

आज पचासेक वर्ष की उम्र में ब्रेम टैक्सस में दो ऑटो डीलरशिप, एक विज्ञापन एजेंसी और एक जायदाद के खरीद-फरोख्त की कंपनी की मालकिन हैं। वह 'वीमन मेक द बेस्ट सेल्समैन' और 'द 7 ट्रुथ्स अबाउट सक्सेफुल वीमन' नामक दो पुस्तकों की लेखिका हैं। ''मैंने सात कर्मचारी नियुक्त करके काम शुरू किया जिनमें मेरा बड़ा लड़का (तब 19 वर्ष का) भी शामिल था। जल्दी ही उनकी संख्या 50 तक पहुंच गई,'' वह बताती हैं।

ब्रेम जब पांच वर्ष की थी, तभी उसके माता-पिता का तलाक हो गया था। उसे, उसके तीन भाइयों और उसकी मां को उसके दादा-दादी ने पाला-पोसा। उन्हें याद है, उनके अवकाशप्राप्त स्कूल अध्यापक दादाजी थे, उन्हें कैसे-कैसे गुर सिखाते थे। पहली बात तो यह कि जितनी आशा की जाए उससे कहीं ज़्यादा कर दिखाओ। (जब मेरे प्रथम ग्रेड के अध्यापक ने मुझसे 10 पर्यायवाची शब्द लिख कर लाने को कहा तो मेरे दादा जी ने मुझसे 100 पर्यायवाची शब्द लिखवा दिए। और दूसरी बात- उन्होंने भाषा का महत्व समझाया। ''जो व्यक्ति एक से अधिक भाषाएं बोल सकता है, वह दो व्यक्तियों के बराबर महत्वपूर्ण हो जाता है' वह कहते थे।''

जब वह 8 वर्ष की थीं तो उनकी मां ने पुन: विवाह कर लिया और वे ऐरिजोना तथा कई अन्य जगहों में रहे। ग्रेजुएशन से पहले उन्होंने चार राज्यों के अनेक स्कूलों में पढ़ाई की। हर बार 'नई लड़की' के रूप में सामने आना बड़ा कठिन काम था। लेकिन, इससे मैंने परिवर्तन को स्वीकारने और कठिनाइयों को सुअवसरों में बदलने की कला सीख ली।''

वह उन तमाम लोगों के प्रति आभार व्यक्त करती हैं जिन्होंने उनकी सफलता में योगदान किया है। इनमें उनके निष्ठावान कर्मचारी भी शामिल हैं जिन्होंने उनकी कारपोरेट यात्रा के अधिकांश हिस्से में उनका साथ निभाया। वह अब भी अपने दादाजी की उस सीख का अनुसरण करती हैं: जितनी आशा हो, उससे सदा अधिक करो। ''यह कालजयी सीख है,'' वह कहती हैं।

मैरियॉन ल्यूना ब्रेम

सी ई ओ, लव क्रिस्लर

मनपसंद हॉबी: अमेरिकी राष्ट्रपतियों का इतिहास पढ़ना

शौक: यात्रा करना, क्लासिक फिल्में देखना

विशेष पसंद: स्पा, फाइव-स्टार होटल, बढ़िया खाना

साभार: मैरियॉन ल्यूना ब्रेम